

AU TALK

April, 2024



VOLUME-25



Editorial Board

Patron

Prof. Sangita Srivastava Honourable Vice Chancellor, University of Allahabad

Chief Editor

Dr Chandranshu Sinha Associate Professor, Department of Psychology, University of Allahabad
chandranshu.sinha@allduniv.ac.in; Mob: 9650670222

Board of Editors

Dr Nakul Kundra Associate Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drnakulkundra@allduniv.ac.in

Dr Jaswinder Singh Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
dr.jaswindersingh@allduniv.ac.in

Dr Charu Vaid Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drcharuvaid@allduniv.ac.in

Dr Shibban Ur Rahman Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drshibanur@allduniv.ac.in

Dr Sandeep K. Meghwal Assistant Professor, Department of Visual Arts, University of Allahabad;
skmeghwal@allduniv.ac.in

Mr. Vishal Vijay Assistant Professor, Centre for Theaters and Films, University of Allahabad; vishalvijay@allduniv.ac.in

Ms. Jigyasa Kumar Curator, Vizianagram Hall and Museum, University of Allahabad;
vizianagramcurator.au@gmail.com

Contents

	<u>Page No.</u>
Alumni Meet	4-12
Housing construction for teachers of UoA	14
Department Wise Events:	
Faculty of Law	15
Centre of Environmental Studies	16
Article: Hidden Threats in Our Food: Aflatoxins (AFs) in Food, Their Far-reaching Health Effects and methods of their mitigation	17-18
Book & Movie of the Edition	19

ALUMNI MEET 2024

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 27 अप्रैल को पुरा छात्र सम्मेलन (एलुमनाई मीट), 'फैमिलियर फेसेस फीएस्टा' का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री आशीष कुमार चौहान, कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद एलुमिनाई एसोसिएशन के प्रधान प्रो. हेराम्ब चतुर्वेदी और सचिव प्रो. कुमार बीरेंद्र ने दीप प्रज्वलित कर की। इसके बाद संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने कुलगीत प्रस्तुत किया।



इसमें देश-विदेश के अलग-अलग हिस्से से आए विश्वविद्यालय के पुरा छात्र शामिल हुए। सम्मेलन में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में कार्यरत न्यायाधीश और उच्च न्यायालयों में पदासीन न्यायाधीश सहित कई लोग भाग ले रहे हैं। इसी के साथ, देश के सभी प्रमुख शहरों में फैले विभिन्न पदों पर आसीन अधिकारी भी शामिल हुए। फिल्म एवं साहित्य जगत में देश-विदेश में नाम कमा रहे पुरा छात्रों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस दौरान भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस वी.एन. खरे ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अपने अनुभव साझा किए।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस विक्रम नाथ ने कहा कि वह अपने विद्यार्थी जीवन में साइकिल से पूरे शहर को नापा करते थे। उन्होंने मौजूद लोगों से अपील की है कि विश्वविद्यालय खासकर विज्ञान संकाय को देखकर इसके

गौरवशाली इतिहास को समझें, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से जुड़ाव गर्व की बात है। वहीं, सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ने कहा कि अपनी शिक्षा, ज्ञान एवं अपने कृतज्ञता से भरे व्यक्तित्व का श्रेय इलाहाबाद विश्वविद्यालय को देते हुए कहा कि इस संस्था ने मेरे जीवन को एक सार्थक दिशा प्रदान की है।



सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस सुधांशु धुलिया ने भी अपने अनुभव साझा किए। वहीं, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस पंकज मिश्र से शिक्षकों की तारीफ करते हुए कहा इस विश्वविद्यालय में शिक्षक ऐसे पढ़ाते थे कि परीक्षा के लिए किताब खोलने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी।



वहीं, फिल्म निर्देशक तिग्मांशू धुलिया ने कहा कि जब मैं यहां पढ़ता था तब शिक्षक ऐसी फररिदार अंग्रेजी बोलते थे कि ऐसा लगता था कि वह भारत में नहीं बल्कि ऑक्सफोर्ड में बैठे हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि यदि मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नहीं होता तो मुंबई में इतना बड़ा नाम नहीं कमा पाता। इस दौरान पुरा छात्र प्रवीण राय सहित कई वक्ताओं ने अपने विचार रखे।



अपने अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने दुनिया के अलग-अलग हिस्से से आए पुरा छात्रों का विश्वविद्यालय में स्वागत किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय केवल इमारतों एवं चहारदीवारी से नहीं बनता है, बल्कि उसकी पहचान यहां से पढ़कर निकले हुए विद्यार्थियों की उपलब्धियों से बनती है। यहां के विद्यार्थियों ने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों से विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। विश्वविद्यालय आज भी उत्कृष्ट शिक्षा, ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसके लिए यहां के शिक्षक एवं अन्य कर्मचारी पूरी लगन के साथ दिन-रात मेहनत करते रहते हैं। हमारे पूर्व विद्यार्थियों के सहयोग से ईश्वर टोपा भवन का निर्माण हुआ है। उन्होंने आशा जताई कि आगे भी पुरा छात्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विकास में भरपूर सहयोग करते रहेंगे। कुलपति ने यह भी कहा कि जिस तरीके से विश्वविद्यालय अभी कार्य कर रहा है, निश्चित तौर पर एनआईआरएफ के सर्वश्रेष्ठ 200 संस्थाओं की सूची में अपना स्थान बनाएगा तथा नैक में ए प्लस प्लस रेटिंग अर्जित करेगा।

कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर जया कपूर और डॉ. सोनल शंकर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन एलुमिनाई एसोसिएशन के सचिव प्रो. कुमार बीरेंद्र ने किया। कार्यक्रम के दौरान भरतनाट्यम नृत्यांगना उर्वशी जेटली ने भरतनाट्यम की मनमोहक प्रस्तुति दी।

पुरा छात्र सम्मेलन के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद एलुमिनाई एसोसिएशन की आरे से मुंबई और दिल्ली चैप्टर को संबंधता प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस सम्मेलन में एलुमनाई एसोसिएशन के मोबाइल ऐप "यूओएए" के चांसलर प्रो आशीष कुमार चौहान एवं वीसी प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने लॉन्च किया। विश्वविद्यालय पर आधारित फिल्म 'द बनियान ट्री' को भी रिलीज किया गया। इस दौरान उत्तर प्रदेश के डीजीपी रहे श्री ओम प्रकाश सिंह की पुस्तक 'क्राइम, ग्राइम एंड गुप्शन' का अनावरण किया गया। इसी क्रम में पुरा छात्रा अनामिका श्रीवास्तव का काव्य संग्रह 'शब्दनाद' का लोकार्पण किया गया। वहीं, पुरा छात्र वीरेंद्र ओझा की पुस्तक 'दास्तान और भी है' का अनावरण किया गया।

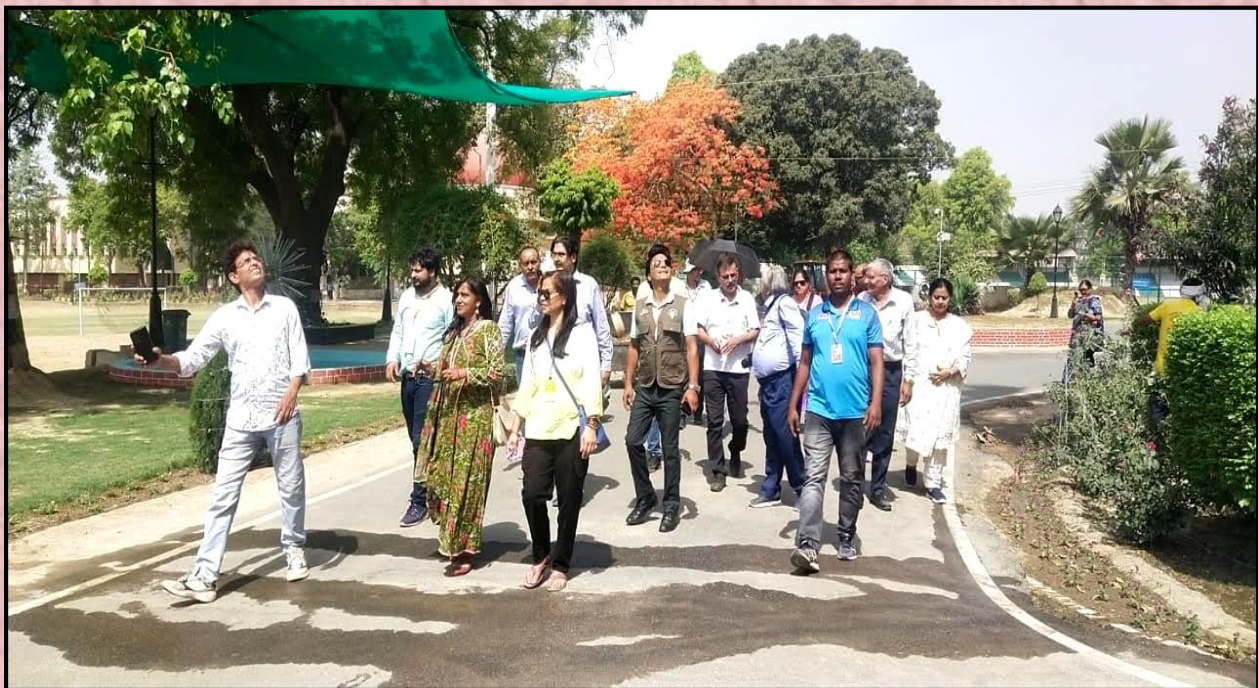
निराला आर्ट गैलरी के पास फूड कोर्ट और कला एवं शिल्प प्रदर्शनी लगाई गई। देश-विदेश से आए एलुमनाई ने यहां पर लज़ीज़ खाने का लुत्फ उठाया। प्रदर्शनी की सुंदरता ने भी पुरा छात्रों का मन मोहा।



एलुमनाई मीट के पहले दिन शाम में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें भजन, तबला वादन, सितार वादन, लोक संगीत, रूसी गीत, वेस्टर्न क्लासिक गीत, कविताएं एवं गजल की प्रस्तुति दी गई। इसके साथ ही समूह नृत्य की प्रस्तुति दी गई।



सम्मेलन के दूसरे दिन रविवार की सुबह पुरा छात्रों को संगम तट पर नौका विहार करवाया गया। वीआईपी तट से नौकाओं पर सवार होकर पुरा छात्रों ने संगम तट और सरस्वती घाट तक नौका विहार का आनंद लिया। इसके बाद पुरा छात्रों ने विज्ञान संकाय में आयोजित हैरिटेज वॉक में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने विजयनगरम् हॉल सहित अन्य ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण किया।





Hon'ble VC meeting with 96 years old Alumnus of UoA



इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रविवार को पुरा छात्र सम्मेलन (एलुमनाई मीट), 'फ़ैमिलियर फेसेस फीएस्टा' के दूसरे दिन सुप्रसिद्ध कवि डॉ. कुमार विश्वास सहित अन्य कवियों ने समां बांध दिया। कवि डॉ. कुमार विश्वास ने जैसे ही अपनी प्रस्तुति शुरू की, तो दर्शकों ने तालियों से स्वागत किया।



इस मौके पर डॉ. कुमार विश्वास ने कहा कि आज इस मंच पर खड़ा होकर यह सोचकर मैं एक विशेष स्पंदन से भर गया हूँ कि इसी प्रांगण में कभी फिराक, कभी मदन मोहन मालवीय, कभी हरिवंश राय बच्चन, कभी महादेवी वर्मा तो कभी धर्मवीर भारती घूमा करते होंगे। उन्होंने पुरा छात्र सम्मेलन के सुअवसर पर कवि सम्मेलन करवाने के लिए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव का विशेष आभार व्यक्त किया। यहां का एक-एक एलुमनाई एक विश्वविद्यालय के समान है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के केन्द्रों से ही भारत का निर्माण होता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय न केवल भाषा, ज्ञान, विज्ञान, आध्यात्म और साहित्य का एक महत्वपूर्ण रहा है बल्कि छात्र राजनीति का भी एक उदभव केंद्र रहा है। अपनी कविता 'मैं अपने गीत-गजलों से "कोई कल कह रहा था, तुम इलाहाबाद रहते हो" के माध्यम युवा दिलों को टटोला। "कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है..." के माध्यम से खूब तालियां बटोरीं।



कवि डॉ. राजीव राज ने कहा कि कुंभ की नगरी में होने वाला यह पुरा छात्र सम्मेलन स्वयं में कुंभ जैसा है जहां वर्षों से बिछड़े साथी एक-दूसरे से मिले हैं। उन्होंने 'यादें झीनी रे' गीत से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं, कविता 'मोहल्ले भर का एक कुंआ' से सभी को अपने युवास्था में दोबारा पहुंचा दिया।



वहीं, जबलपुर से आए सुदीप भोला ने अपनी कविता 'गौरैया ने अब बागों में आना छोड़ दिया है' के माध्यम से एक पिता के दर्द को बयां किया और बेटियों को सुरक्षा की चिंता व्यक्त की।

बाराबंकी से आए कवि गजेंद्र प्रियांशू ने अपनी कविता 'इतने निर्मोही कैसे सजन हो गए' के माध्यम से विदेशों में कमाने गए पुरुषों के बाद घरों में महिलाओं की दर्द बयां किया। इसके साथ ही राजनीतिक व्यंग भी किया।

इस दौरान कविता तिवारी ने 'जब तक ये चांद चकमे तब-तक ये हिंदुस्तान रहे' के माध्यम से राष्ट्रप्रेम के प्रति प्रेरित किया। वहीं, 'जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो....' के माध्यम से महिलाओं का उत्साहवर्धन किया।

शिक्षकों के लिए आवास निर्माण

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए आवास सुविधा में को बेहतर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई। बेली कॉलोनी में 16वर्षों से अधूरे बन कर छोटे मकानों के निर्माण को पूरा करवा दिया गया है। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव द्वारा इन सभी का उद्घाटन 2 अप्रैल को किया गया है। इनको शिक्षकों को आवंटित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। नए बने मकानों में 6 मकान प्रोफेसर के लिए, 8 एसोसिएट प्रोफेसर के लिए और 16 एसिस्टेंट प्रोफेसर के लिए हैं। बेली कॉलोनी में 16 वर्षों से इन आवासों का निर्माण कार्य रुका हुआ था। नए शिक्षकों की भर्ती के साथ ही देश के अनेक स्थानों से आए शिक्षकों को आवास सुविधा उपलब्ध कराने की प्रक्रिया में इनको पूरा करने के प्रयास किए गए और अब ये आवंटन के लिए तैयार हैं।



Faculty of Law

A Lecture on the new criminal laws was held at the Faculty of Law, the University of Allahabad, on 6th April, 2024. Hon'ble Mr Justice Kshitij Shailendra, Judge (High Court of Allahabad) and Prof. Priti Saxena, Director (CPGLS, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow) were invited as distinguished speakers for the lecture. The lecture was an enriching learning experience for the law students and faculty. Justice Kshitij Shailendra highlighted each change brought by the new legislation and its enforcement challenges for the government. Prof. Saxena emphasised the intricate relationship between criminal laws and their bearing on fundamental rights. In other words, she spoke about constitutional encroachment due to the new criminal laws.



The lecture was of immense significance. It is notable that the entire landscape of criminal law has undergone a change; the old laws, namely the Indian Penal Code, Code of Criminal Procedure and Evidence Act, have seen innovative changes. A large number of students and all the faculty members were present at the event. Prof Adesh Kumar, Coordinator of the three-year law programme, delivered the welcome address. Dr Priya Vijay conducted the event, and Dr Sonal Shankar extended the vote of thanks.

Legal Quiz Competition

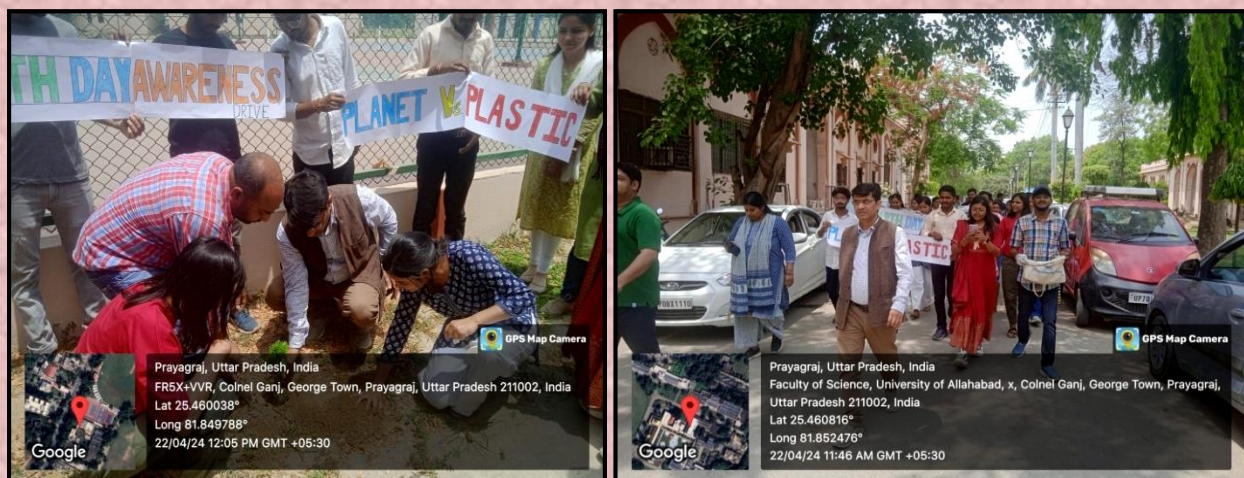
A legal Quiz competition was organised by the Faculty of Law, the University of Allahabad, on 20th April 2024 for the students of LLB (Hons) 3-year law students under the guidance of Prof Adesh Kumar, Coordinator, the Department of Law. The students displayed immense enthusiasm, and 15 teams participated in the elimination round of the competition. After the elimination round, the quiz was held in three phases: quarter-final, semifinal and final rounds. The semifinal of the quiz took place among four teams, and after a tough competition, two teams competed in the finals. The finals had oral and visual rounds where questions related to current legal affairs were asked, and the images of legal luminaries and eminent personalities were also displayed to the students to know whether they recognized them or not.



Both teachers and students were enthralled by the exhilaration of the moment, concluding with the declaration of the winning team, consisting of Satyam Kumar, Naman Mishra, and Ritik Pandey of LLB Semester II. The quiz was meant to develop students' awareness of socio-legal issues and enhance their acquaintance with contemporary law.

Centre of Environmental Studies

The students, faculty and staff of the Centre of Environmental Studies, University of Allahabad, observed World Earth Day 2024 under the theme 'Planet versus Plastic'. This theme focuses on the need for collective action to repair and heal the planet. As such, an awareness drive led by the students under the given theme was carried out in the premises of Faculty of Science, University of Allahabad, to address the problem of plastic pollution, climate crisis, and adopting behavioral change in lifestyle to protect the Environment. Besides this, a plantation drive was also carried out in M. N. Saha Udyan, where Mor Pankhi saplings were planted by the students, faculty and staff of the Centre of Environmental Studies.



The students displayed posters to spread awareness about the need to protect the earth from pollution, especially plastic pollution. Our theme, Planet versus Plastic, calls to advocate for widespread awareness on the health risk of plastics and take action for a healthier and brighter planet. The indoor activities to observe World Earth Day 2024 started with Saraswati Vandana, and were followed by the address of Prof. Umesh Kumar Singh, Coordinator of the Centre. The Coordinator motivated the students to follow practices for minimizing the use of plastics in daily life. He further urged the students to avoid using plastic bags and encouraged the use of jute or cloth bags. He also highlighted and cautioned about the serious repercussions of climate degeneration, stating 2024 would be harsher/ hotter relatively. Besides, a speech competition on the theme 'Plastics versus Planets' was organized by the students of the Centre, where M.Sc. students and Ph.D. scholars presented their concerns and views.

Other faculty members, Dr. Puneeta Pandey, Dr. Pankaj Srivastava, Dr. Jitendra Ahirwal, Dr. Pawan Kumar Jha, Dr. Kumar Suranjit Prasad, were present in the program.

Hidden Threats in Our Food: Aflatoxins (AFs) in Food, Their Far-reaching Health Effects and methods of their mitigation

*Dr. Prateek Kumar

Prevalence: People in underdeveloped countries, especially those living in rural areas, have more difficulties when it comes to mycotoxin contamination, which raise major worries about the quality of food. Mycotoxins are poisonous products by diverse genus of fungi such as *Penicillium*, *Fusarium*, *Alternaria* and *Aspergillus*. Greek terms "mycos" and "toxin," which signify "fungus" and "poison," respectively. It should be highlighted that not all dangerous compounds made by fungus are categorized as mycotoxins. Food contamination is a serious and mostly ignored risk caused by various toxigenic molds (fungi). Their presence in food has an influence on food safety and quality, hence it can result in large economic losses. There are now about 400 identified mycotoxins. A type of mycotoxins known as aflatoxins are produced by the *Aspergillus parasiticus* and *Aspergillus flavus*. Around 100,000 turkeys and other agricultural animals fed on rations of peanuts and cottonseed perished in England during a major outbreak of Turkey "X" illness in the 1960s, which led to the discovery of aflatoxins. Aflatoxin B1 (AFB₁), Aflatoxin B2 (AFB₂), Aflatoxin G1 (AFG₁), and Aflatoxin G2 (AFG₂) are the four major aflatoxins (AFs) found.

Health effects: Eating food and feed contaminated with AF has led to serious health problems in both people and animals. AFM1 is less hazardous than AFB1, however it has been associated with the development of cancer, toxicity to cells, ability to cause mutations, ability to damage genetic material, and potential to cause birth defects. Many nations have set maximum permissible limits (MPL) for aflatoxins in food and feed to protect public health. Exposure to AF not only poses a significant risk to the health of animals and humans, but it also gives rise to serious economic challenges that inevitably affect the marketing and distribution of food products.

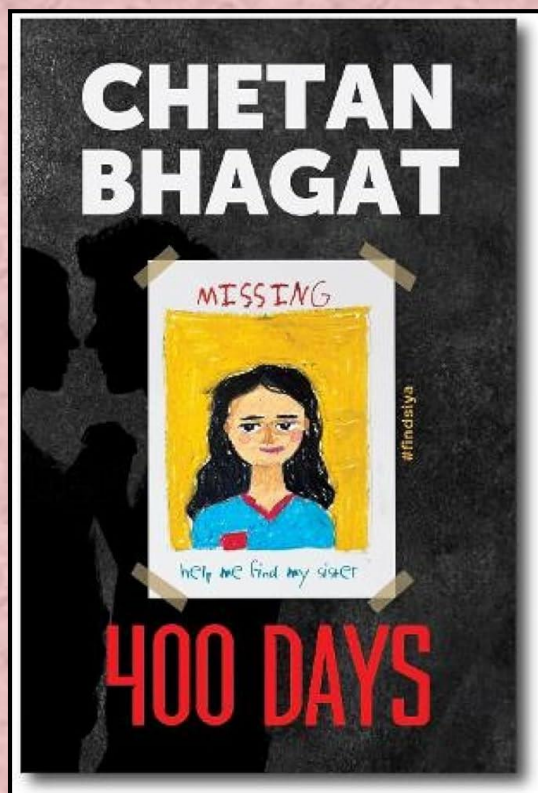
Mitigation: The chemical compounds known as AFs are extremely stable and break down between 237°C and 306°C. Therefore, they won't be destroyed by standard cooking or heat processing. Nevertheless, there are several control/preventive measures that can be used to help solve the problem of mycotoxin contamination, as there is no single solution that can prevent or completely eliminate it. Traditional methods for preventing mycotoxin poisoning typically require pre- and post-harvest techniques. Unlike post-harvest methods that focus on sorting and proper storage, pre-harvest treatments tackle fungal contamination in the field. Good manufacturing procedures, resistant crop variety development, and good agricultural practices are all pre-harvest mitigation techniques that have

been demonstrated to be effective in avoiding AF. Post-harvest management supports effective grain food chain management from harvesting to washing, drying, storage, and processing, which is critical for reducing mycotoxin impacts. The most promising and economical way to address mycotoxin contamination in grains is through post-harvest management techniques. It has been shown, meanwhile, that these attempts to eradicate bacteria that produce mycotoxin are unsuccessful. The application of biological, physical and chemical procedures for the prevention and detoxification of currently diseased agricultural products has also been made possible by scientific advancements. To tackle the expanding number of mycotoxin contamination instances, a single technique cannot be used globally, hence multidimensional mycotoxin decontamination approaches for food commodities are necessary. Reducing agricultural pollution over an extended period of time requires the adoption of resistant crop varieties or biocontrol methods. The need for faster, more precise, sensitive, selective, and reasonably priced technologies to detect and evaluate mycotoxins in foods and feeds is undoubtedly necessary. Novel processing methods like microwave heating, cold plasma, gamma irradiation and electron beam, pulsed light and UV, and electrolyzed water have shown significant promise for future uses. The use of electrochemical biosensors based on nanomaterials for AF detection is a rapidly developing field of study. It is suggested to combine biomarker-based monitoring with the traditional food analysis method in order to evaluate the exposure to aflatoxins and the associated health impacts in at-risk populations. It might be a great idea to utilize genetic engineering to create new, genetically modified plants that can withstand fungal invasion. It will be necessary to find creative solutions to meet global concerns about food safety and security. Therefore, further investigation is needed to fully comprehend the effectiveness, safety, and financial viability of these cutting-edge AF decontamination methods.

*Assistant Professor, Department of Zoology

BOOK OF THE EDITION

400 DAYS



MOVIE OF THE EDITION

Ghoomer



- AU TALK publishes news about seminars/workshops/conferences that have taken place at any Department or Centre of the University. A piece of news along with a **photograph of the organizers** should be emailed at editorialboard.autalk@allduniv.ac.in
- The magazine publishes informative articles also. Articles should aim to bring out important scientific, ethical, and environmental issues and must be lucid in their message to society. They can be written in Hindi or English. In one edition, the magazine can publish up to four such articles.
- **Do not send pictures capturing garlanding or shawl/memento-giving moments.**
- The magazine should be widely circulated among students and faculty and on all social media platforms so that the excellent work done under the auspices of the University of Allahabad reaches far and wide and benefits all.